IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कमार अनुसूचित जनजाति की संस्कृति में निरन्तरता एंव परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(छत्तीसगढ़ के गरियाबन्द जिले के विशेष संदर्भ मे)

डॉ. विकास बंजारे
सहा.प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति
महाविद्यालय नवापारा राजिम ,
जिला–रायपुर(छ.ग.)पिन कोड–493881

1 नवम्बर 2000 को छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ, छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत 5 जनजातियों क्रमशः कमार, अबुझमाड़िया, पहाड़ी कोरवा, बिरहोर और बैगा को विशेष पिछड़ी जनजाति के रूप में भारत सरकार द्वारा मान्य किया गया है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में सात विषेश पिछड़ी जनजातीयों में से पांच को केन्द्र सरकार द्वारा एंव दो को राज्य सरकार द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है, जिसमें कमार अनुसूचित जनजाति भी शामिल है।

कमार अनुसूचित जनजाति, छत्तीसगढ. की पांच विशेष पिछडी जनजाति में से एक है इनका संकेन्द्रण छत्तीसगढ. के गरियाबंद, धमतरी एंव महासमुंद जिले मे है, इनकी उत्पत्ती के संबंध मे मतैक्यता न होने के बाउजूद, ये गोड. जनजाति की उप शाखा के रुप मे जानी जाती ळें

अध्ययन क्षेत्र– कमार जनजाति गरियाबंद जिले की गरियाबंद, छुरा, मैनपुर विकासखण्ड में मुख्यतः निवासरत है। इस जनजाति को भारत सरकार द्वारा ''विशेष पिछड़ी जनजाति'' का दर्जा प्राप्त है। 2011 की जनगणना अनुसार राज्य में इनकी जनसंख्या 26530 दर्शित है, इनमें 13070 पुरूष एवं 13460 स्त्रियॉ है।

कमार जनजाति अपनी उत्पत्ति मैनपुर विकासखंड के देवडोंगर ग्राम से बताते है। इनका सबसे बड़ा देवता ''वामन देव'' आज भी देवडोंगर की वामन डोंगरी में स्थापित है। प्रस्तुत अध्ययन में तुहामेटा गांव को अध्ययन के लिये चुना गया। गांव गरियाबंद से 55 कि.मी. अंदर सुदूर जगह पर बसा है। यहॉ लोग अति पिछड़े है।

संस्कृति की सैद्धातिंक विवेचना

संस्कृति एक जटिल अवधारणा है, जन सामान्य से लेकर विभिन्न विचारकों और विभिन्न विज्ञानों तक में इसके अर्थों को लेकर मत भिन्न है। सामान्यत जन सामान्य की दृष्टि से प्रचलित अर्थ में संस्कृति का अर्थ सभ्य या सुसंस्कृत से लगाया जाता है, जो व्यक्ति अधिक शिक्षित है, जिसका आचरण और व्यवहार का तरीका सामाजिक मान्यताओं के अनुकूल है, उसे सभ्य और सुसंस्कृत माना जाता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है, जिसमें वे सभी वस्तुऍ सम्मिलित हैं जिन पर कि हम विचार करते है, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते है। उसके अन्तर्गत हम जीवन को जीने ,

कार्य करने एवं विचार करने के उन सभी तरीको को सम्मिलित करते है, जो एक पीढी को हस्तांतरित होते है और समाज के स्वीकृत अंग बन चुके है।

संस्कृति के भौतिक और अभौतिक दो स्वरूप है, भौतिक संस्कृति, वह है जिसे हम देख, सुन और अनुभव कर सकते है, इस अर्थ में तमाम भौतिक वस्तुएँ जैसे मेज, कुर्सी, मकान और आभूषण आदि भौतिक संस्कृति के उदाहरण है, इन वस्तुओ को हमने निर्मित किया है, हमारे उपयोग में आती है, इस दृष्टि से भौतिक संस्कृति , संस्कृति का वह स्वरूप है जो कि मूर्त है तथा जिसमें शीध्र उपयोगिता अथवा लाभ का गुण निहित है, और जिसकी परिवर्तन की गति नई नई भौतिक वस्तुओ और उपकरणों की खोज के कारण बहुत तीव्र है। अभौतिक संस्कृति वह है जो कि हमारे विचारो, विश्वासों और मान्यताओं मे निहित है, यह अनुभवगम्य है, इस दृष्टि से अभौतिक संस्कृति मूर्त न होकर अमूर्त है, अपेक्षाकृत स्थायी और कम परिवर्तनशील है। प्रथाओं, परंपराओ और धार्मिक विश्वासों तथा विचारो का परिवर्तन इतना धीमा है कि कई पीढियों के बाद भी ऐसा लगता है कि जैसे अभौतिक संस्कृति की इन बातों मे कोई परिर्वतन हुआ ही नही है। प्रत्येक समाज में सांस्कृतिक उपकरण अथवा संस्कृति के तत्व विद्यमान है। उदाहरण के लिए चरण स्पर्श करना, केश बढाना, चुम्बन लेना, झंडे को सलामी देना, विभिन्न प्रकार के देवी–देवताओ की मूर्तिओ को पूजना, अनेक प्रकार के वस्त्र आभूषणो का उपयोग करना आदि। इनके द्वारा एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति से अलग किया जा सकता है। किसी एक संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व दूसरी संस्कृति के लिए महत्वहीन हो सकता है।

परिर्वतन की सैंद्धातिक विवेचना

'' परिवर्तन'' को अंग्रेजी के 'change' , 'alteration' तथा 'modification' आदि शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। परिवर्तन किसी वस्तु, विषय अथवा विचार में समय के अन्तराल से उत्पन्न हुई भिन्नता को कहते हैं। परिवर्तन तब और अब की स्थितियों के बीच पैदा हुए, अन्तर को प्रकट करता है। 'परिवर्तन' एक बहुत विस्तृत संप्रत्यय है और यह जैविक, भौतिक तथा सामाजिक तीनों जगत में पाया जाता है। किन्तु जब परिवर्तन शब्द के पूर्व ' संस्कृति ' शब्द जोड़कर उसे ' संस्कृति परिवर्तन' बना दिया जाता है तो निश्चित ही उसका अर्थ सीमित हो जाता है। संस्कृति परिवर्तन को हम एक संपूर्ण परिर्वतन का एक भाग कह सकते हैं क्योंकि भौतिक एवं जैविक जगत में होने वाले परिवर्तनों को संस्कृति परिवर्तन के क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है।

कमार की उत्पत्ति :–

कमारों की उत्पत्ति के संबंध में जिन तथ्यों का संग्रह किया गया है, उन से स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि वास्तव में कमारों की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी उत्पत्ति के संबंध में अनेक विरोधाभास प्रारंभ से ही पाये गये है, जो निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप बदलते गये है। प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार कमारों की उत्पत्ति बस्तर जिले में हुई तथा इसका विस्तार बाद में रायपुर जिले के आसपास बिखर गया है। ये पॉच भाई थे, जो बस्तर–क्षेत्र में निवास करते थें। इन भाइयों में दो भाइयों की आदत खराब हो गयी। तब इनमें बॅटवारा हो गया। इनमें से एक भाई को नागर मिला जो कृषक हो गया जिसे गोड़ कहा जाने लगा, दूसरे को करघा मिला जो कोष्ठी हो गया। तीसरे को चाक मिला जो कुम्हार कहलाया, चौथे को बॉस की बनी वस्तुएँ तथा कुदाल मिली जो कमार कहलाया, तथा पॉचवें भाई को घर का नगाड़ा मिला, जो गाड़ा जाति के रूप में जाना गया। इस बटवारे के पश्चात् कमार बस्तर से स्थानान्तरित होकर भाटीगढ़ आये।

कमार बोली :–

कमारी बोली आदर्श द्रविड़ीय तथा आर्यन भाषाओं के सम्मिश्रण के फलस्वरूप बनी। उदाहरण अःताः(माता के भाई की पत्नी), (माता की बहन), (माता की सास), अःतो (हम), कड़हा (लड़का,पति), कड़ही (लड़की), कड़हो (वर), काःड़(तीर), गाः र(अण्डा), डोःआ (आख), दादी (पिता के पिता), बाःपी (पिता के माता) उपरोक्त शब्द द्राविड़ीयन भाषा के आधार पर आधारित है। इसी भाषा के समान 'कमारी' बोली जाती है। कुछ शब्दों में कमारी, आर्यन मेल खाती है एवं हल्बी, छत्तीसगढ़ी, मराठी, एवं उड़िया भाषा का मिश्रण है।

महत्व :–

वर्तमान में संम्पूर्ण जनजातीय भारत, संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। इस संक्रमण के दौरान जनजाति के संस्कृति में निरंतरता एंव परिवर्तन हुए, इन परिवर्तनों की प्रकृति और कारण अलग अलग हो सकते हैं, अध्ययन मे इन्ही तथ्यो को ज्ञात किया गया है।

प्राप्त तथ्यो का विश्लेषण एंव व्याख्याः–

कमार अनुसूचित जनजाति की भौतिक संस्कृति में निरंतरता एवं परिवंर्तनशीलता को बतलाया गया है। आवास संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि सर्वेक्षित कमार अनुसूचित जनजाति में 10 प्रतिशत उत्तरदाता झोपड़ीनुमा आवास में तथा 60 प्रतिशत उत्तरदाता कच्चे मकान तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाता अर्द्धपक्का मकान में निवास करते है। अतः स्पष्ट होता है कि आज इन क्षेत्रों में पिछडे पन में कमी आई है, तथा आवास संबंधी परिवर्तन देखने को मिला है। 6 प्रतिशत जनजाति महिला–पुरूष अपने परम्परागत गहनों के साथ आधुनिक गहनों का उपयोग करते है। और इन परम्परागत गहनों में परिवर्तन का कारण शहरी क्षेत्रों से सम्पर्क, शिक्षा के महत्व के कारण परिवर्तन हुआ है।

89 प्रतिशत उत्तरदाता परम्परागत औजार का उपयोग कृषि कार्य हेतु तथा अन्य कार्य हेतु उपयोग करते है। वहीं 11 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि एवं अन्य कार्यो के लिए आधुनिक औजार का उपयोग करते है।

60 प्रतिशत उत्तरदाता मनोरंजन के साधन में परिवर्तन किये है तथा 40 प्रतिशत उत्तरदाता आज भी परम्परागत मनोरंजन के साधनों का उपयोग करते है।

समग्र उत्तरदाताओ मे से 70 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाईल का प्रयोग करते है। इसी (समग्र) में से 40 प्रतिशत उत्तरदाता टी.वी. तथा आधुनिक खेल जैसे क्रिकेट, फुटबाल वहीं 10 प्रतिशत उत्तरदाता मनोरंजन के लिए रेडियों का भी प्रयोग करते है। अतः मनोरंजन संबंधी वस्तुओं के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि जनजातियों में आधुनिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण देखा गया है।

कमार अनुसूचित जनजाति की भौतिक संस्कृति के तत्व स्थिर नहीं हैं, बल्कि वे विभिन्न कारणों से बदल रहे हैं। समय के साथ, वे विविध प्रकृति के बदलते परिवेश के अनुरुप ढल रहे हैं। तद्नुसार वे खुद को नई बदली हुई स्थिति के अनुकूल बनाने के लिए प्रयासरत हैं,

कमार अनुसूचित जनजाति की अभौतिक संस्कृति एंव वर्तमान सामाजिक संरचना को बतलाया गया है 100 प्रतिशत जनजातियों में पितृअधिकार परम्परा हैं।

18 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में जबकी 82 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी या एकल परिवार में निवास करते है अतः कमार अनुसूचित जनजाति मे संयुक्त परिवार कम होते जा रहा है। उसकी जगह एकाकी परिवार ले रहे हैं।

प्रसव संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुवा की कमार परिवारो में शिशु का जन्म 43 प्रतिशत घर मे (38 प्रतिशत पिता के घर में होता है तथा 5 प्रतिशत शिशु का जन्म माता के घर में होता है) जबकी 57 प्रतिशत परिवार में शिशु का जन्म अस्पताल में होता है। अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कमार जनजाति में प्रसव संबंधी परिवर्तन देखने को मिला हैं।

शिशु को प्रथम खाद्य में 100 प्रतिशत माताएं अपना दूध पिलाती है जो पहले भी होता था। 6 प्रतिशत महिलाएं बच्चे के 6 माह के बाद दूध के साथ पौष्टिक पदार्थ दाल पानी, दलिया खिलाती है। जबकी 94 प्रतिशत माताएं अपने दूध के साथ चावल व चावल से बना खाद्य या पानी देते है।

जनजातियों में आज भी शत् प्रतिशत छठ्ठी संस्कार (जन्मोत्सव) पूर्ववत है तथा शत् प्रतिशत सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रम भी पूर्ववत ही है तथा शत् प्रतिशत जनजातियों में छठ्ठी भोज का आयोजन आज भी कराया जाता है। इससे उनकी संस्कृति में निरंतरता कुछ बदलाव के साथ स्पष्ट है।

नामकरण संस्कार के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ की 94 प्रतिशत जनजाति परिवार आज भी परम्परागत विधि से बच्चों का नाम रखते है यथा जिस दिन जन्म होता है या जगह के आधार पर उनका नाम रखते है। जबकी केवल 6 प्रतिशत कमार जनजाति अपने बच्चो का नाम बैगा तथा महंत के अनुसार या पंचांग आदि में देखकर रखते है साथ ही इनमे से कुछ रामायण ग्रंथ से बच्चे का नाम रखे है। अतः इस क्षेत्र में भी परम्परागत स्थिति अधिक देखने को मिला है। तथापि कुछ उत्तरदाताओं में आधुनिक समाज या हिन्दुओं के रिवाजों को कुछ अंश तक अपनाते हुए देखा गया है।

शिक्षा संबंधी अध्ययन से यह तथ्य प्राप्त हुआ कि 83 प्रतिशत अध्ययनगत समूह अपने बच्चो को उच्च शिक्षा देना चाहते है तथा 17 प्रतिशत शिक्षा के प्रति उदासीन है वे शिक्षा के महत्व से अनभिज्ञ है तथा बच्चों को अपनी परम्परागत व्यवस्था में ही रखना चाहते है या स्कूल तक पहुंच न होने के कारण वे बच्चो को शिक्षा देने के पक्ष में नहीं है।

जो उत्तरदाता शिक्षा देने के पक्ष में है उनमें 80 प्रतिशत बच्चों को नौकरी दिलाने के लिए शिक्षा देना चाहते है तथा 10 प्रतिशत केवल ज्ञान के लिए तो वहीं 10 प्रतिशत सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शिक्षा को अनिवार्य मानतें हैं। अतः अध्ययनगत समूह में शिक्षा के प्रति जागरूकता स्पष्ट रुप से देख सकते हैं।

विवाह संस्कार संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि 38 प्रतिशत जनजातियों में विवाह संस्कार में परिवर्तन देखने को मिला है। जबकी 62 प्रतिशत कमार जनजाति में आज भी विवाह संस्कार में परम्परागत रूप को ही देखा गया, साथ ही शत् प्रतिशत जनजाति में समूह भोज का आयोजन होता है विवाह के उपरांत 100 प्रतिशत जनजाति वधु अपने पति के गृह या निवास स्थान में रहती है। अतः कमार जनजाति में पितृ स्थानीय परंपरा आज भी विद्यमान है।

6 प्रतिशत जनजातियों में विवाह विच्छेद देखने को मिला है। तथा 94 प्रतिशत कमार जनजाति में आज भी विवाह को जन्म जन्मांतरण का साथ समझकर निभाते है।

पंचायत संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुवा की शत् प्रतिशत कमार जनजाति पंचायत होती है (भले ही उसका चुनाव अब कुछ हद तक परम्परागत या वंशानुगत न होकर आधुनिक संवैधानिक पद्धति से किया जाता हो) जनजाति पंचायत का मुखिया वहां के वृद्ध व्यक्ति को ही चुना जाता है। 88 प्रतिशत जनजाति पंचायत का गठन परम्परागत रूप से तथा 12 प्रतिशत संवैधानिक विधि से करते है। जनजाति पंचायत के द्वार जनजाति उत्थान एवं विकास संबंधी कार्य किया जा रहा है।

राजनीतिक जागरुकता संबंधी अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुआ की कमार जनजाति में 88 प्रतिशत उत्तरदाता मतदान के प्रति जागरूक है तथा अपने मताधिकार को समझनें लगें है जबकी 17 प्रतिशत उत्तरदाता इसके प्रति उदासीन हैं जिन्हे जागरूक करने की आवश्यकता है।

धर्म संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि 94 प्रतिशत कमार जनजाति अदृश्य देवी देवता की पूजा करते है तथा इनमे सें ही 95 प्रतिशत जनजाति उन देवी देवताओं के लिए बलि देते हैं वहीं इनमें केवल 6 प्रतिशत जनजातियों में

उपवास रखतें है तथा 94 प्रतिशत उपवास नहीं रखते एवं शत् प्रतिशत उत्तरदाता गृहपूजा या यज्ञ नहीं करते केवल जादू क्रिया से ही गृहपूजा करते है तो वहीं आज भी 95 प्रतिशत जनजातियों द्वारा जादू टोना जैसे धार्मिक कृत्य किये जातें है। 7 प्रतिशत जनजातियों में परिवर्तन हुआ है वही 93 प्रतिशत कमार जनजाति आज भी परम्परागत धार्मिक क्रियाओं के अनुसार कार्य करते है।

मृत्यु संस्कार संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि शत् प्रतिशत उत्त्रदाताओं द्वारा मृत्युभोज का आयोजन किया जाता है तथा केवल 10 प्रतिशत उत्तरदाता नाई, धोबी के कर्म करते है एवं शत् प्रतिशत उत्तरदाता नए वस्त्र धारण करते है तथा अविवाहित स्त्री या पुरूष के मृत्यु के बाद कुछ जादुई क्रियाए जैसे टोना जादू आदि कार्य मृतात्मा की शांति के लिए करते है। शत् प्रतिशत कमार जनजाति अपने बाल मुंडवाते है। मृत्यु के पश्चात कमार जनजाति मे परम्परागत रुप में जादू टोना जैसी रूढीवादी प्रथा की छाप स्पष्ट दिखाई पडती है।

लोक कला संबंधी अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शत् प्रतिशत कमार जनजाति मे परम्परागत नृत्य शैली मनोरंजन के रूप में साथ ही विभिन्न उत्सवों में परम्परागत नृत्य शैली करते है। अध्ययनगत कमार जनजाति समूह के लोकगीत एवं लोककला में 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई बदलाव नहीं किया है जबकी केवल 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा इसमें बदलाव किया है। कुछ परिवर्तन उनके परिधान तथा उनके वाद्ययंत्र आदि में हुआ है तथापि यथावत् हैं। अतः कमार जनजातियों में लोकगीत तथा लोककला आज भी यथावत् विद्यमान है।

वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं का कमार अनुसूचित जनजातीय समुदायों की अभौतिक संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पडा है। वैश्वीकरण प्रत्येक समाज पर एक सजातीय उपभोक्तावादी संस्कृति और मूल्य प्रणाली थोपता है गतिकी का नियम हर समाज पर सार्वभौमिक रुप से लागू होता है और कमार अनुसूचित जनजाति कोई अपवाद नहीं है।

इस प्रकार जनजातीय समुदायों के स्वदेशी और बहिर्जात दोनों तरह की परिवर्तन की ताकतों के संपर्क में आने से कमार अनुसूचित जनजातीय की जीवन शैली और संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पडा हैं।

अर्थव्यवस्था

पंचम अध्याय में कमार अनुसूचित जनजाति की अर्थव्यवस्था को बतलाया गया है शत् प्रतिशत कमार जनजाति धान की खेती करते है तथा धान की खेती के साथ ही 31 प्रतिशत ज्वार की, 12 प्रतिशत कुल्थी, 6 प्रतिशत उड़द, 5 प्रतिशत मूंग, 6 प्रतिशत अरहर की खेती करते है।

वनोपज संग्रह संबंधी विवरण से स्पष्ट होता है कि शत् प्रतिशत कमार जनजाति द्वारा ऋतु अनुसार वनोपज संग्रह किया जाता है। जिसमें शत् प्रतिशत महुआ का संग्रह करते है इसके साथ ही 30 प्रतिशत टोरी, 94 प्रतिशत तेंदूपत्ता, 6 प्रतिशत हर्रा, 7 प्रतिशत चरोटा, 6 प्रतिशत तिखूर का संग्रह कर अपना जीवन–यापन करतें है इस प्रकार हम कह सकतें है की शत् प्रतिशत जनजाति आज भी वन संपदा पर आर्थिक रुप से निर्भर हैं।

पशुपालन संबंधी अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 89 प्रतिशत कमार जनजाति बैल रखते है क्योंकि परम्परागत कृषि कार्य में बैलों की आवश्यकता होती है इसके साथ ही 59 प्रतिशत उत्तदाता गाय के साथ–साथ भैंस तथा साथ ही 95 प्रतिशत उत्तदाता बकरा–बकरी एवं 95 प्रतिशत जनजाति मुर्गा–मुर्गी पालन करतें हैं एवं 6 प्रतिशत उत्तदाता मछली पालन स्थानीय स्तर पर करतें हैं।

सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 71 प्रतिशत कमार जनजाति शासन द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं का लाभ ले रहें हैं। जबकी 29 प्रतिशत उत्तरदाता इन योजनाओं का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। अतः उनमें योजना संबंधी जागरूकता कि आवश्यकता है। जो उत्तरदाता योजनाओ का लाभ ले रहें है उनमे से 94 प्रतिशत जनजाति मजदूरी करतें हैं साथ ही इनमें से शत् प्रतिशत कृषि मजदूरी, साथ मे 94 प्रतिशत लोक निर्माण विकास कार्यक्रमों के माध्यम से, साथ ही 45 प्रतिशत उत्तरदाता बांस बर्तन निर्माण के माध्यम से अपना जीविकोपार्जन करते है।

कमार अनुसूचित जनजाति की अर्थव्यवस्था कृषि, वनोपज, आदि, कई के लिए आजीविका का एक प्रमुख साधन बनी हुई है, उनकी आजीविका का साधन, निर्वाह कृषि आय से विविध आधुनिक बाजार–उन्मुख रोजगार और अर्थव्यवस्था में बदल जाता है।

विभिन्न विकास पहलुओं के परिणामस्वरुप उपलब्ध कराए जाने वाले विभिन्न व्यवसायों के संदर्भ में आय के स्रोतों में विविधता आई है। आधुनिक शिक्षा आजीविका के साधनों में परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह परिवर्तन व्यवस्थित रुप से प्रति व्यक्ति आय और शैक्षिक स्तर में वृद्धि के साथ जुडा हुआ हैं।

निष्कर्षः–

कमार अनुसूचित जनजाति की भौतिक संस्कृति में निरंतरता एवं परिर्वतनशीलता के अंर्तगत आवास संबंधी अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि अब ये वनो से निकल कर मैदानी भागो तथा सडक के किनारे बसना ज्यादा उपयोगी तथा सुविधाजनक मानने लगे है

मकान निर्माण हेतु पक्की ईट, ईमारती लकडी, सीमेंट, छड. आदि का भी प्रयोग करते है ये अब घरो कि लिपाई–पोताई चूने तथा कृत्रिम रंगों से करते हैं।

कमार जनजाति के वेशभूषा मे महत्पपूर्ण परिवर्तन दिखाई पडता हैं अब महिलाये परंपरागत वस्त्रों के स्थान पर रंगीन प्रिंटेट साडी, तथा सिल्क साडिया भी इस्तेमाल करने लगी है कमार युवतियां वेस्टन कपडे पहनने लगीं है। साथ ही विभिन्न प्रकार की ऐसेसीरिज का प्रयोग करनें लगी है। कमार युवक जींस,टी–शर्ट, शर्ट, कोट–पेंट, रुमाल, टोपी चश्मा आदि ऐसेसीरिज का प्रयोग करने लगे है। शहरो के समीप बसे ग्रामो के कमारो में आधुनिक वेश–भूषा धारण करने की प्रवृति अधिक पायी गई है।

कमार अनुसूचित जनजाति के स्त्री एंव पुरुष श्रृगांर प्रिय है ये धार्मिक, सामाजिक, विवाह, विभिन्न प्रकार के पर्वो, तीज त्यौहारो आदि के अवसरो पर विशेष रुप से श्रृंगार करते है। परंपरागत आभूषणो के साथ ही साथ अब ये हाट–बाजारो में बिकने वाली आधुनिक आभूषणो को भी धारण कर रहे है जो इनके फैसन के प्रति रुझान को इंगित करता है।

कमार अनुसूचित जनजाति गोदना प्रिय अनुसूचित जनजाति हैं, वर्तमान मे परंपरागत रुप से हाथ से गोदने के स्थान पर मशीन से गोदना गोदाते है तथा पारंपरिक आकृति के स्थान पर आधुनिक आकृति की गोदना गुदवा रहे है।

कमार अनुसूचित जनजाति के लोग अपनी विशिष्ट घरेलू वस्तुओ के कारण अन्य समाजो से पृथक रुप से पहचाने जा सकते है, परंपरागत रुप से इनके घरो में भोजन निर्माण एंव अन्य उपयोगी वस्तुएं होती ही है जिनका

निर्माण स्थानीय कारीगरो या स्वंय के द्वारा होता हैं, इसके साथ ही वर्तमान मे ये, कारखानो, कंम्पनियो मे निर्मित एंव आयातित वस्तुओ का इस्तेमाल करने लगे हैं उदा. के लिए प्लास्टिक, स्टील, कांसे, क्राकरी आदि से निर्मित थाली, गिलास, बल्टी, पानी पीने का बोतल, मोल्डेड फर्नीचर, विभिन्न प्रकार के सजावट की सामाग्री का आदि का उपयोग कर रहे हैं उपभोक्तावादी समाज की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

कमार अनुसूचित जनजाति के लोग प्रकाश एंव ईंधन, कृषि संबंधी औजारो, मछली एंव शिकार पकडने के यंत्रो, मनोरंजन के साधनो, संगीत के साधनो, यातायात एंव संचार के साधनो मे परिवर्तन कर रहे है।

कमार अनुसूचित जनजाति के भौतिक संस्कृति मे सकारात्मक परिवर्तन इनकें सामाजिक आर्थिक प्रगति को सूचित करती है, कमार अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रों मे अवसंरचना निर्माण के लिये सरकारी पहलकदमियों तथा संबंधित केंद्र प्रायोजित योजनाओं में कमारो के सामाजिक और आर्थिक स्तर में सुधारो को देखा गया है।

कमार अनुसूचित जनजाति के अभौतिक संस्कृति मे भी परिवर्तन एंव निंरतरता पायी गई हैं, कमार जनजाति अपने पारंपरिक जीवन विधि मे जीते हुये बाह्य कारकों से प्रभावित हुए है। ये बाह्य तत्वों के प्रभाव के कारण सामाजीकरण, संस्कृतिकरण एंव सात्मीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। परिणाम स्वरुप सम्पूर्ण जीवन चक्र परिवर्तित हो रहा है।

कमार अनुसूचित जनजाति मे जन्म, विवाह एंव मृत्यु प्रमुख संस्कार है। कमार जनजाति के विवाह के स्वरुप एंव मान्याताओं मे महत्वपूर्ण परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। अब ये वैवाहिक घरो में आधुनिक सज्जा करने लगे हैं, तथा पैदल बरात जाने के स्थान पर मोटर साईकिल, कार, बस आदि का प्रयोग करने लगे है। विवाहों मे परंपरागत वाद्य–यंत्रो के स्थान पर बैंड–बाजे, डी.जे. आधुनिक वाद्य यंत्रो का उपयोग करने लगे है। सम्पन्न कमार परिवारो में फोटोग्राफी–विडियो रिकार्डिंग का प्रयोग किया जा रहा है कमार अनुसूचित जनजाति मे विवाह संबंधी जो महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गये वो क्रमशः वैवाहिक मूल्यो मे परिवर्तन, वैवाहिक संबंधो मे परिवर्तन तथा जीवन साथी चुनने के तरिके में परिवर्तन है। वर–वधु के उम्र मे अपेक्षाकृत वृद्धि पायी गई है।

कमार अनुसूचित जनजाति के धार्मिक जीवन में उनके पारंपरिक देवी देवताओं के साथ साथ अब हिन्दू धर्म के देवी देवताओ का समावेश हो चुका है अब कमार जनजाति के लोग अपने परंपरागत देवी देवताओं के पूजा में अन्य धर्म के धार्मिक गीत, गाते बजाते है। कमार जनजाति के धार्मिक जीवन में प्रमुख रुप से उनके देवी देवता की पूजा विधियो एंव मान्यताओ मे परिवर्तन हुआ है।

कमार अनुसूचित जनजाति के पर्व व त्यौहार का इनके सामाजिक जीवन में विशेष महत्व होता है ये पर्व व त्यौहार इनके जीवन मे हर्ष एंव उल्लास लाते है ये अपने पर्व एंव त्यौहारो मे पारंपरिक गतिविधियो के साथ साथ लाउड स्पीकर, डी.जे. बजाना, लाईट, एल.ई.डी बल्व , आर्टिफीसियल सामाग्री से साज सज्जा करना, फटाके फोडना, आदि कार्य करते है। ये अब पारंपरिक त्यौहारो के साथ साथ हिन्दू समाज के दीपावली, दशहरा, मकरसंक्राति तथा महाशिवरात्रि का भी त्यौहार मनाते है।

कमार अनुसूचित जनजाति की समस्त लोक कला विधाओ मे नवीनता का समावेश स्पष्ट दिखाई पडता है। क्योकि सरकार कमार विकास अभिकरण बनाकर इनके आर्थिक विकास हेतु प्रयास कर रही है विकास अभिकरण के

माध्यम से लोगों की उपयोगिता एंव अभिरुचियो को ध्यान में रख कर कलात्मक वस्तुओ का निर्माण कराया जा रहा है जिससे इनके लोक शिल्प एंव अन्य कलाओं मे परिवर्तन आ रहा है

कमार अनुसूचित जनजाति के जाति पंचायत दिनो–दिन शिथिल पडती जा रही है तथा इसका स्थान संवैधानिक ग्राम पंचायत ले रही है कई कमार जनजाति के लोग जाति पंचायत के फैसलों को नहीं मानते, जिसके कारण जाति पंचायत की उपेक्षा भी होती है जाति पंचायत, गैर–जनजातीय व्यक्तियो तथा संगठनों का सम्पर्क, राजनीतिक दलो का संम्पर्क, सरकारी योजनाओं का विस्तार, संवैधानिक पंचायतों का प्रभाव, आवागमन एंव संचार के साधन नगरीय संपंर्क एंव अन्य शासकीय संस्थाओं के प्रभाव के कारण प्रभावित हुई है।

कमार अनुसूचित जनजाति के परिवारों के अध्ययन मे आर्थिक, सामाजिक, परिवर्तन होने के संकेत मिले है कमार परिवार का आकार छोटा हो रहा है तथा इसकी सत्ता कमाउ व्यक्ति के हाथो मे केन्द्रीत हो रही है। संयुक्त संपंत्ति के स्थान पर एकल संपंत्ति की भावना प्रबल हुई है।

कमार अनुसूचित जनजाति के नातेदारी संबंधो मे भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। कमार जनजाति में देवर तथा साली विवाह की प्रवृत्ति मे कमी पायी गई है। इसके साथ ही परिहास संबंधो मे भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुका है।

कमारों की आर्थिक व्यवस्था पूर्णतः आदिम थी। इनमें परिवर्तन के फलस्वरूप नये लक्षण व नये आयाम आये हैं। कमार जनजाति जो पूर्व में खाद्य पदार्थो के संग्रहण शिकार तथा स्थानान्तरित कृषि पर आधारित थी, में धीरे–धीरे परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप ये कृषि बांस–बर्तन निर्माण मजदूरी वनोपज संग्रहण तथा पशुपालन एवं नौकरी इत्यादि करने लगे हैं। स्थानान्तरित कृषि पर प्रतिबंध के कारण ये स्थायी कृषि करने लगे हैं, कमार भविष्य में अत्याधुनिक औजारों एवं तकनीकि ज्ञान के द्वारा भी कृषि करने में सक्षम हो सकते हैं। कमार कृषि के साथ–साथ कृषक मजदूर के रूप में भी कार्य करते हैं, शिकार पर प्रतिबंध के फलस्वरूप अब कमार स्वतंत्रतापूर्वक धनुष–बांण लेकर जंगलों में विचरण नहीं करते हैं। प्रायः कमार कंधो पर कुल्हाड़ी या टंगिया लटकाये जंगलों में दिखायी पड़ते हैं। यद्यपि शिकार पूर्णतः प्रतिबंधित हैं, फिर भी कमार छोटे जीव–जन्तु का शिकार आज भी करते हैं, जिसमें मुख्यतः खरगोश ,चूहा, कोब्री इत्यादि हैं। ये पक्षियों का भी शिकार तीर (टोहलीतीर) के माध्यम से करते हैं। इसके साथ ही साथ कमारों को मछली का भोजन करना अत्यधिक पसंद हैं। इसके लिये ये विभिन्न प्रकारों के परपंरागत औजारों तीर तथा फांदों (ट्रेप) का उपयोग करते हैं। कमारों में सामूहिक मछली पकड़ना तथा सामूहिक आखेट की परपंराओं का ह्रास हुआ है।

वर्तमान में कमार पशुपालन की ओर आकर्षित हुये हैं।इनमें पशु–धन की संख्या में बढ़ोतरी हुई हैं। मुख्यतः कमार भैंस, भैंसा, गाय, बकरी, सुअर इत्यादि पालते हैं। प्रत्येक कमार परिवार मुर्गा–मुर्गी अवश्य पालते हैं। जिनकी संख्या इस क्षेत्र में अत्यधिक हैं। कमारों की आर्थिक प्रणाली में बाजार की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जहॉ ये आवश्यक वस्तुओं का क्रय करते हैं संगृहीत वस्तुओं, बांस बर्तन इत्यादि का विक्रय भी बाजार में करते हैं। इनमें परंपरागत विनिमय प्रणाली समाप्त हो गयी हैं। इसका स्थान मुद्रा ने ले लिया हैं।

कमार के सर्वांगीण विकास के लिये ही कमार विकास अभिकरण का गठन किया गया हैं, परंतु इसके कोई शत् प्रतिशत परिणाम सामने नहीं आये हैं। इन विकास कार्यक्रमों को और अधिक आकर्षित एवं त्वरित परिणाम वाले बनाने चाहिए। यह भी ध्यान देना चाहिए कि कार्यक्रम विकास उन्मुख एवं इनकी संस्कृति एवं परंपरा के अनुरूप हों।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. छत्तीसगढ. समग्र, छत्तीसगढ. राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, द्वितीय संस्करण 2013

2. https://vikaspedia.in/social-welfare/scheduled-tribes-welfare/particularly-vulnerable-tribal-groups

3.कार्यालय, परियोजना प्रशासक एंव सचिव , एकीकृत आदिम जाति विकास परियोजना, कमार विकास अभिकरण, गरियाबंद

4.http://cgtrti.gov.in/pvtg_Kamar.html

5 रसेल एण्ड हीरालाल. ;1916द्ध. ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविसेंस ऑफ इण्डिया.

6-दुबे,श्यामाचरण (1950) द कमार, इथनोग्राफी एण्ड फोक कल्चर सोसायटी, लखनउ उत्तरप्रदेश.